Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

1 "Sat Kāryavād"

(सत्यकार्यवाद)

सांख्य के कार्यकारण सिद्धान्त को 'सत्यकार्यवाद' कहा जाता है। सत्कार्यवाद सत् + कार्य + वाद के संयुक्त होने से बना है। सत्यकार्यवाद वह सिद्धान्त है जो उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार करता है। ("Sat Kāryavāda theory of existence of effect in its cause prior to its production.")

कारण अव्यक्त कार्य और कार्य अभिव्यक्त कारण है। वस्तु के उत्पत्ति का अर्थ अव्यक्त से व्यक्त हो जाना और इसके विपरीत विनाश का अर्थ व्यक्त से अव्यक्त हो जाना है। दूसरे शब्दों में उत्पत्ति को आविर्भाव और विनाश को तिरोभाव कहा जाता है।

न्याय वैशेषिक के कार्यकारण सिद्धान्त को असत्कार्यवाद कहते हैं। अ (Non), सत् (existence), कार्य (effect), वाद (Theory) के सम्मिश्रण से बना है। असत्यकार्यवाद वह सिद्धान्त है जो उत्पत्ति के पूर्व कार्य की सत्ता कारण में अस्वीकार करता है। ("Asat Kāryavāda is the theory of the non. existence of the effect in its prior to its production)

असत्कार्यवाद के अनुसार कार्यकारण की नवीन सृष्टि है। असत्यकार्यवाद को

आरम्भवाद भी कहा जाता है। क्योंकि यह सिद्धान्त कार्यकारण को एक नई वस्तु मानता है।

साँख्य ने सत्कार्यवाद को सिद्ध करने के लिए अनेक तर्क दिये हैं,

1. यदि कार्य की सत्ता को कारण में असत माना जाय तो कारण से कार्य का निर्माण नहीं हो सकता है। जो असत है उससे सत का निर्माण असम्भव है (असदकारणात) यदि असत को सत में लाया जाये तो बन्ध्या पुत्री की उत्पत्ति भी सम्भव हो जाती है। इससे सिद्ध होता है कि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान है। अप्रत्यक्ष कार्य को प्रत्यक्ष रूप प्रदान करना निमित्त कारण का उद्देश्य है।

2. विशेष कार्य के लिए विशेष कारण की आवश्यकता महसूस होती है। (उपादान ग्रहणात) तेल के निर्माण के लिए बीज की आवश्यकता होती है कंकड़ की नहीं। इससे प्रमाणित होता है कि कार्य अव्यक्त रूप से कारण में विद्यमान है।

3. यदि कार्य की सत्ता को उत्पत्ति के पूर्व कारण में नहीं माना जाए तो कार्य के निर्मित हो जाने पर हमें मानना पड़ेगा कि असत् से सत् का निर्माण हुआ। परन्तु ऐसा होना सम्भव नहीं है जो असत् है उससे सत् का निर्माण कैसे हो सकता है। out of nothing nothing!

3

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

comes.

4. प्रत्येक कारण से प्रत्येक कार्य का निर्माण नहीं होता है। केवल शक्त कारण (Potent cause) से ही अभीष्ट कार्य (desired effect) का आविर्भाव होता है। शक्त कारण वह है जिसमें एक विशेष कार्य उत्पन्न करने की शक्ति हो। कार्य उसी कारण से निर्मित होता है जो शक्त है (शक्तस्य शक्यकरणात्)। यह तर्क दूसरे तर्क (उपादान ग्रहणात्) का परिवर्तित रूप ही है। उपादान ग्रहणात् में कार्य के लिए कारण की योग्यता पर जोर दिया गया है और इस तर्क में शक्तस्य शक्यकरणात् में कार्य की योग्यता की व्याख्या की गयी है।

5. कारण और कार्य के बीच सम्बन्ध होता है जिससे यह प्रमाणित होता है कि कार्य उत्पत्ति के पूर्व सूक्ष्म रूप से कारण में अन्तर्भूत है।

6. कारण और कार्य के बीच अभेद सम्बन्ध है। यदि कारण और कार्य स्वतः एक दूसरे से भिन्न होते तो इनका संयोग तथा वियोग होता। परन्तु कपड़ा को सूतों से अलग कर सकते वह निर्मित है। परिणाम के दृष्टिकोण से कारण और कार्य समरूप है।

इस सिद्धान्त को

भारतीय दर्शन में सांख्य के अतिरिक्त योग, शंकर, रामानुज ने पूर्णतः अपनाया है। भगवद गीता के इस पंक्ति से "नु सतो विद्यतो भावोन आवेक विद्यतेस्सतः।" से भी सत्कार्यवाद की पुष्टि हो जाती है।

सत्कार्यवाद दो प्रकार के होते हैं — 1. परिणामवाद 2. विवर्तवाद

1. परिणामवाद के समर्थक सांख्य, योग एवं रामानुज हैं। सांख्य के मत को प्रकृति परिणामवाद कहा जाता है। इसके विपरीत रामानुज के मत को 'ब्रह्म' परिणामवाद कहा जाता है।

2. विवर्तवाद के प्रवर्तक शंकर हैं। उनका कहना है कि कार्यकारण का विवर्त है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि कार्यकारण का वास्तविक रूपान्तर है परन्तु वास्तविकता दूसरी है। शंकर ने जगत को ब्रह्म माना है। उनका सारा दर्शन विवर्तवाद के सिद्धान्त पर आधारित है।

परिणामवाद और विवर्तवाद दोनों मानते हैं कि कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व कारण में निहित है। कारण और कार्य एक ही वस्तु की दो भिन्न-भिन्न अवस्थायें हैं। सत्कार्यवाद के रूप को इस तालिका के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :—

सत्कार्यवाद
↓
परिणामवाद — विवर्तवाद

परिणामवाद: प्रकृति परिणामवाद, ब्रह्म परिणामवाद

सत्कार्यवाद के विरुद्ध अनेक आक्षेप किये गये हैं :

1. सत्कार्यवाद को मानने से कार्य की उत्पत्ति की व्याख्या करना असम्भव हो जाता है। यदि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में व्याप्त है तो फिर यह कहना 'कार्य' की उत्पत्ति हुई है व्यर्थ है।

2. यदि कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान है तो निमित्त कारण को मानना व्यर्थ है। यदि तेलहन बीज में तेल निहित है तो फिर तेली की आवश्यकता का प्रश्न व्यर्थ है।

3. सत्कार्यवाद कारण और कार्य को अभिन्न मानता है तो कारण और कार्य के लिए अलग-अलग नाम का प्रयोग करना निरर्थक है।

4. सत्कार्यवाद का सिद्धान्त आत्मविरोधी है। यदि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में ही विद्यमान है तो फिर कारण और कार्य के आकार में भिन्नता का रहना इस सिद्धान्त का खण्डन करता है।

5. यदि उत्पत्ति के पूर्व कार्य कारण में अन्तर्भूत है तो हमें यह कहना चाहिए कि कार्य की उत्पत्ति कार्य से हुई है इस प्रकार हम देखते हैं कि सत्कार्यवाद का सिद्धान्त असंगत है।

सत्कार्यवाद के विरुद्ध अनेक आक्षेपों के बावजूद भी सत्कार्यवाद महत्वपूर्ण सिद्धान्त

है। सांख्य का सारा दर्शन सत्कार्यवाद पर आधारित है।

1. सांख्य अपने सिद्धान्त प्रकृति की स्थापना सत्कार्यवाद के आधार पर ही करता है। प्रकृति को सिद्ध करने के लिए सांख्य ने जितने तर्कों में सत्कार्यवाद का प्रयोग है।

2. विकासवाद का सिद्धान्त सत्कार्यवाद की देन है। सांख्य के विकासवाद में सत्कार्यवाद का पूर्ण प्रयोग हुआ है। सत्कार्यवाद के अभाव में विकासवाद के सिद्धान्त को समझना कठिन है।

इसप्रकार सत्कार्यवाद एक सफल सिद्धान्त है।